विश्व में सैन्य खर्च कम करना ज़रूरी

भारत डोगरा

यदि विश्व में फौजी खर्च न हो तो सभी गरीब परिवारों को प्रति वर्ष डेढ़ लाख रुपए दिए जा सकते हैं जिससे उनकी बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं।

विश्व में वर्ष 2010 में 1,63,000 करोड़ डॉलर का सैन्य खर्च हुआ। इसमें वृद्धि होती ही जा रही है। वर्ष 2001 से यह खर्च 50 प्रतिशत बढ़ गया। इतनी बड़ी धनराशि का अर्थ यह है कि विश्व में प्रति व्यक्ति 233 डॉलर का सैन्य खर्च प्रति वर्ष हो रहा है।

दूसरे शब्दों में, यदि किसी तरह विश्व शान्ति की कोई योजना बना कर सैन्य खर्च समाप्त कर दिया जाए तो विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को इस बचत से 233 डॉलर एक वर्ष में दिए जा सकते हैं। औसतन 4 व्यक्तियों का परिवार मानें तो इसका अर्थ यह है कि प्रति परिवार लगभग एक हज़ार डॉलर दिए जा सकते हैं। इस बचत राशि का आवंटन सब परिवारों में किया गया तो विश्व में एक तिहाई गरीब परिवारों में प्रति परिवार प्रति वर्ष 3000 डॉलर या 1,68,000 रुपए दिए जा सकते हैं।

यदि किसी भी गरीब परिवार को एक वर्ष में अपनी वर्तमान आय से ऊपर 1,68,000 रुपए प्रति वर्ष मिल जाएं तो काफी हद तक उस परिवार की सारी बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं।

दक्षिण एशिया मानव विकास रिपोर्ट ने सैन्य खर्च और विकास के मदों पर खर्च की एक तुलना करने की कोशिश की है। इस आकलन के अनुसार

- एक टैंक की कीमत = 40 लाख बच्चों के टीकाकरण का खर्च
- एक मिराज 2000 हवाई जहाज़ की कीमत = 30 लाख बच्चों की प्राथमिक स्कूली शिक्षा का एक वर्ष का खर्च
- एक आधुनिक पनडुब्बी व उससे जुड़े उपकरण = 6 करोड़ लोगों को पूरे एक वर्ष तक साफ पीने का पानी देने का खर्च

सैन्य खर्च को कम करना है या नहीं, यह किसी भी देश या सरकार के लिए एक बहुत संवेदनशील मुद्दा होता है। यदि युद्ध के समय सैन्य तैयारी कम पाई जाए तो सरकार की बहुत आलोचना होती है। कोई देश नहीं चाहता कि सैन्य तैयारी के अभाव के कारण उसकी सुरक्षा किसी संभावित हमलावर के मुकाबले कमज़ोर हो। साथ ही यह भी सही है कि विश्व से सैन्य खर्च कम करना भी ज़रूरी है। अतः एक कारगर उपाय यह हो सकता है कि किसी बड़े क्षेत्र, जैसे दक्षिण एशिया या मध्य पूर्व के सभी पड़ोसी देशों का सैन्य खर्च कम करने का संयुक्त प्रयास किया जाए।

विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि सैन्य खर्च कम कर शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में निवेश बढ़ाया जाता है तो रोज़गार सृजन कहीं अधिक होता है। सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि पूरे विश्व में सैन्य खर्च न्यूनतम करने के प्रयास एक साथ हों। ***(स्रोत फीचर्स)***